पागल

खलील जिब्रान के The Madman का अनुवाद

अनुवादक
चौधरी शिवनाथसिंह शांडिल्य

युग साहित्य सदन, इन्दौर

प्रकाशक
गोकुलदास धूत,
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर

प्रथम बार, १९४५
मूल्य
एक रुपया

मुद्रक
अमरचंद्र,
राजहंस प्रेस, दिल्ली

भूमिका

महाकवि ख़लील जिब्रान बीसवीं शताब्दी के एक महान् विचारक, लेखक और चित्रकार थे। उनकी रचनाएं विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि है, जिनके अध्ययन से आत्मिक-शान्ति प्राप्त होती है।

प्रसिद्ध आयरिश कवि जार्ज रसेल ने ख़लील जिब्रान की तुलना हमारे रवीन्द्रनाथ से की है और इसमे कोई सन्देह नहीं कि इन दोनों महापुरुषों मे अनेक विशेषताएं समान रूप से विद्यमान थीं। रवीन्द्र की तरह ख़लील जिब्रान के लिए भी कविता एक ईश्वरीय वरदान थी और इस वरदान का उन्होंने पवित्र कार्य मे उपयोग किया। उनकी रचनाओं से मनुष्यों के चित्त को आनन्द मिला और उनकी आत्मा को उसके दिव्य-स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हुआ।

जिस तरह रवीन्द्र ने प्राचीन काल के ऋषि-महर्षियो के अध्यात्म-ज्ञान को अपनी नवीन शैली और भावना-मय शब्दो मे व्यक्त किया है, इसी तरह ख़लील जिब्रान ने भी मध्य एशिया के नबी और सन्तो की वाणी को हृदयंगम करके उसे अपनी अपूर्व काव्य-शक्ति द्वारा जीवित कर दिया है।

पागल (The Madman) ख़लील जिब्रान की सर्वोत्कृष्ट पुस्तको में से एक है, जिसमे लेखक ने बडे ही कोमल और मर्म-स्पर्शी दृष्टान्तों द्वारा जीवन-रहस्य पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य के वास्तविक कर्त्तव्य और आत्मिक पवित्रता के उपदेश दिये हैं। कहने का ढंग ऐसा चमत्कार पूर्ण और हृदयहारी है कि पढने वाला बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकता।

पागल (Madman)जैसी पुस्तको का अनुवाद करना कठिन

कार्य है। मैंने इस पुस्तक के [illegible]

भरसक चेष्टा की है। मैं इसमें [illegible]

विज्ञ पाठक करेंगे ।

मुझे इस कार्य में मेरे प्रिय [illegible]

सहायता दी है। मैं अनुवाद [illegible]

अतः मैं इन दोनों बालकों को आशीर्वाद [illegible]

ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें कि भविष्य में हिन्दी [illegible]

बन सकें।

मैं नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर के योग्य [illegible] का भी आभारी हूं, जिनके प्रयत्न से यह पुस्तक इस सुन्दर [illegible] प्रकाशित हो सकी है।

मैंने इस रचना में श्री रायकृष्णदासजी के हिन्दी अनुवाद तथा श्री बशीर 'हिन्दी' के उर्दू तर्जुमे से लाभ उठाया है, अत मैं इन दोनों अनुवादकों का अनुगृहीत हूं।

माछरा — शिवनाथसिंह शाण्डिल्य

१०-१२-४५

लेखक का परिचय

कवि,ज्ञानी और चित्रकार ख़लील जिब्रान(Khalil Gibran) का जन्म सन् १८८३ ईस्वी में सीरिया देश के माउण्ट लेबनान प्रांत में हुआ था। यह वही प्रांत है जहां यहूदियों के अनेक पैगम्बर पैदा हो चुके है। जब कवि की अवस्था बारह वर्ष की हुई तब उनके माता-पिता उन्हे अपने साथ बेल्जियम, फ्रांस और अन्त मे अमेरिका ले गये। करीब दो वर्ष उपरान्त वे वापिस सीरिया लौटे और कवि को बेरुत के अल्-हिकमत मदरसे में दाखिल कराया। सन् १९०३ ई० मे वह पुनः यूनाइटेड स्टेट्स गये और वहां पांच साल रहकर फ्रांस पहुँचे, जहां उन्होंने चित्रकला का अध्ययन किया। १९१२ ई० मे वह फिर अमेरिका गये और फिर जीवन के अंत तक न्यूयार्क मे ही रहे।

इस समय मे उन्होंने अरबी भाषा मे बहुत-सी पुस्तके लिखीं। कहते हैं कि सीरिया में उनकी पुस्तकों का बहुत आदर हुआ है। लगभग सन् १९१८ से उन्होंने अंग्रेजी मे लिखना शुरू किया और और तब से उनकी ख्याति सिर्फ अंग्रेजी-भाषा-भाषी जनता मे ही नहीं बल्कि अनुवाद द्वारा सारे यूरोप मे फैल गई। यूरोप की करीब बीस भाषाओं मे उनकी पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं।

उनकी तमाम पुस्तके स्वयं उनके बनाये हुए चित्रोंसे विभूषित हैं। इन चित्रों का प्रदर्शन पश्चिमी जगत् के सारे देशों की राजधानियों मे हो चुका है।

उनकी अंग्रेजी पुस्तकों के नाम [illegible]

इस प्रकार है:—

दि मैडमैन	[illegible]
बीस चित्र	[illegible]
दि फोर रनर	[illegible]
दि प्राफेट	[illegible]
सैन्ड एन्ड फोम	[illegible]
जीसस, दि सन आव मैन	१९२८
दि अर्थ-गॉड्स	१९३१
दि वान्डरर	१९३२
दि गार्डन आव दि प्राफेट	१९३३

इस महान् कवि का देहान्त ४८ वर्ष की उम्र मे सन् १९३१ मे होगया। क्या हम वैसी ही आशा करे जैसी कि उसने अपनी जीवन सदेश (The Prophet) नामक पुस्तक के अन्त मे दिलाई है—

"भूल मत जाना मैं फिर वापिस आऊंगा।

"कुछ ही समय उपरात मेरी सचित वासना नया शरीर धारण करने के लिए मिट्टी और पानी जमा करेगी।

"कुछ ही समय पश्चात् वायु पर क्षण भर विश्राम लेकर फिर कोई दूसरी माता मुझे धारण करेगी।"

और "उस समय हमारी अधिक बाते होगी, और तब तुम्हारे भीतर से एक अधिक गूढ़ गीत का आविर्भाव होगा।'

?

पा ग ल

: १ :

मैं पागल कैसे बना ?

तुम पूछते हो कि मैं पागल कैसे बना ? बात यह हुई कि एक दिन—जब बहुत से देवता तो पैदा भी न हुए थे, मैं एक गहरी नींद से जागा और देखा कि मेरे समस्त नकाब (आवरण)—वे सातों नकाब (आवरण) जो मैंने अपने सात जन्मों मे बनाये और पहने थे, चोरी होगये हैं। बस मैं भीड-भाड़ से भरे हुए मार्गों पर निरा-वरण ही "चोर ! चोर !! नारकीय चोर !!!" कहता हुआ दौड पडा। स्त्री और पुरुष मुझे देख कर हंसने लगे, और कुछ मुझे देख कर घरों मे जा छिपे।

जब मैं बाजार मे पहुचा तो एक युवक ने जो छत पर खडा था चिल्ला कर कहा—"पागल है, पागल है।" उसे देखनेके लिए जब मैंने ऊपर आखे उठाईं तो पहली बार सूर्य ने मेरे आवरणहीन चेहरे का चुम्बन किया। मेरी आत्मा सूर्य के प्रेम मे विह्वल हो उठी और मुझे अपने नकाबो की कोई आवश्यकता न रही। मैं सहसा चिल्ला उठा—"भला हो उन लोगो का जिन्होने मेरे नकाब

चुराये है।" और इस प्रकार मैं पागल बन गया। और इस पागलपन मे मुझे स्वतन्त्रता और सुरक्षा दोनो ही प्राप्त हुए—एकाकीपन की स्वतन्त्रता और अज्ञेयता की सुरक्षा। क्योंकि जो लोग हमे जान जाते है वे हमारे कर्त्तव्य के किसी न किसी अंश को गुलाम बना लेते है।

परन्तु अपनी सुरक्षा पर मुझे अधिक गर्व नहीं करना चाहिए। बन्दीगृह मे बन्द एक चोर भी दूसरे चोर से सुरक्षित रहता है।

: २ :
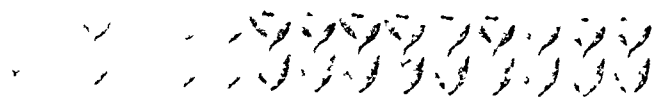
ईश्वर

प्राचीन काल में जब मेरे होंठ पहली बार हिले तो मैंने पवित्र पर्वत पर चढ़कर ईश्वर से कहा—

"स्वामिन् ! मैं तेरा दास हूं। तेरी गुप्त इच्छा मेरे लिए कानून है। मैं सदैव तेरी आज्ञा का पालन करूंगा।"

लेकिन ईश्वर ने मुझे कोई जवाब न दिया और वह एक जबरदस्त तूफान की तरह तेजी से गुजर गया।

एक हजार वर्ष बाद मैं फिर उस पवित्र पहाड़ पर चढ़ा और ईश्वर से प्रार्थना की "परम पिता, मैं तेरी सृष्टि हूं; तूने मुझे मिट्टी से—साधारण मिट्टी से पैदा किया है और मेरे पास जो कुछ है, सब तेरी देन है।"

किंतु परमेश्वर ने फिर भी कोई उत्तर न दिया और वह हजार-हज़ार सवेग परों (पक्षियों) की तरह सन से निकल गया।

हजार वर्ष बाद मैं फिर उस पवित्र पहाड़ पर चढ़ा और ईश्वर को सम्बोधन करके कहा—"हे प्रभु, मैं तेरी सन्तान हूँ। प्रेम और दया पूर्वक तूने मुझे उत्पन्न किया है। और तेरी भक्ति तथा प्रेम से ही मैं तेरे साम्राज्य का अधिकारी बनूंगा।"

लेकिन ईश्वर ने कोई जवाब न दिया और एक ऐसे कुहरे की तरह जो सुदूर पहाड़ों पर छाया रहता है, निकल गया।

एक हजार वर्ष बाद मैं फिर उस पवित्र पहाड़ पर चढ़ा और परमेश्वर को सम्बोधित करके कहा—
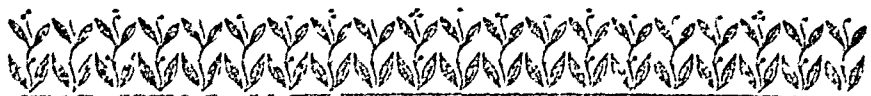
"मेरे मालिक ! तू मेरा उद्देश्य और तू ही मेरी परिपूर्णता है। मैं तेरा विगत-काल और तू मेरा भविष्य है। मैं (पृथ्वी पर) तेरा मूल हूं और तू आकाश मे मेरा फूल है और हम दोनो एक साथ सूर्य के प्रकाश मे पनपते है।"

तब ईश्वर मेरी तरफ झुका और मेरे कानो मे आहिस्ता से मीठे शब्द कहे और जिस तरह समुद्र अपनी ओर दौडती हुई नदी को छाती से लगा लेता है उसी तरह उसने मुझे सीने से लिपटा लिया।

और जब मै पहाडो से उतर कर मैदानो और घाटियो में आया तो मैंने ईश्वर को वहा भी मौजूद पाया।

: ३ :

मेरे दोस्त

मेरे दोस्त ! मै जो दिखाई देता हूँ वास्तव मे वह नहीं हूँ। मेरा प्रकट तो एक-मात्र खोल है जिसे मैं पहने हुए हूँ। यह खोल बड़ी होशियारी से बुना गया है। जो मुझे तुम्हारी विचारणा, और तुम्हे मेरी बेपरवाहियो से बेखबर रखता है। ख़ामोशी के पर्दों मे छिपा हुआ है और हमेशा वही छिपा रहेगा। और न कोई इसे अनुभव कर सकेगा और न इस तक कोई पहुँच सकेगा।

मेरे मित्र ! मैं यह नही कहता कि जो कुछ मैं कहूँ उसे सच मानो और जो कुछ मैं बोलूं, उसका समर्थन करो। क्योकि मेरी बाते मेरी नहीं बल्कि तेरे ही विचारो की प्रतिध्वनि है। और मेरे कर्म तेरी इच्छाएं है जो इस बनावटी लिबास से प्रकट हुई है। जब तू कहता है कि हवा का बहाव पच्छिम की ओर है तो मैं कहता हूँ निस्सन्देह पच्छिम की ओर है, क्योकि मैं तुझे यह बताना नही चाहता कि इस वक्त मेरे दिल मे हवा के बजाय समुद्र का ध्यान लहरें मार रहा है। तू मेरे विचारो की गहराई तक नहीं पहुँच सकता और न मैं चाहता हूँ कि तू उनकी तह तक पहुँचे। क्योकि मैं समुद्र पर अकेला ही रहना चाहता हूँ।

मेरे दोस्त ! जब तेरे लिए दिन होता है तब मेरे लिए रात होती है। लेकिन फिर भी मैं उस समय दोपहर की उन सुनहरी किरणों की बाते करता हूं जो पहाड़ो पर नृत्य करती है। और उस लाल वर्ण छाया की बातें करता हूँ जो घाटियो पर आहिस्ता-

आहिस्ता आ जाती है। क्योंकि न मेरे अन्धकारों के गीत सुन नहीं सकता और न तारों के निकट मेरे पैरों को फड़फड़ाते देख सकता है। और मेरा दिल भी नहीं चाहता कि तू मेरे गीतों को सुन सके और न मेरे पैरों को फड़फड़ा सके। क्योंकि मै रात के समय अकेला रहना ही पसन्द करता हूँ।

जब तू स्वर्ग की ओर उड़ता है तो मै नर्क की गहराइयो मे उतर जाता हूँ। उस समय भी तू मुझे पार न होने योग्य झील के किनारे से पुकारता है—

"मेरे दोस्त ! मेरे मित्र !!" तो मै भी तुझे "मेरे दोस्त ! मेरे मित्र !!" कह कर जवाब देता हूँ, क्योकि मैं नहीं चाहता कि तू मेरे नर्क को देखे। क्योंकि इसकी चिनगारियां तेरी दृष्टि को झुलस देगी और इसका धुआँ तेरे सांस को रोक देगा। मुझे अपने नर्क से इतना प्रेम है कि मै नहीं चाहता कि तू वहां आवे। मै अपने नर्क मे अकेला ही जीवन व्यतीत करता हूँ।

मेरे मित्र ! तुझे धर्म, सत्य और सौन्दर्य से प्रेम है और मै भी तेरी खातिर यही कहता हूँ कि इन चीजो से मोहब्बत करना उचित और सराहनीय है। लेकिन मै दिल मे तेरी इस मोहब्बत पर हंसता हूँ। इसके बावजूद, मै नहीं चाहता कि तू मेरी हंसी को देखे। क्योंकि मै हंसने के लिए भी अकेलापन पसन्द करता हूँ।

मेरे दोस्त ! तू दूरदर्शी और अनुभवी है। मै जानता हूँ कि तू हर बात मे अद्वितीय है।

मेरे मित्र ! इसलिए मै भी तुझ से सोच समझ कर बाते
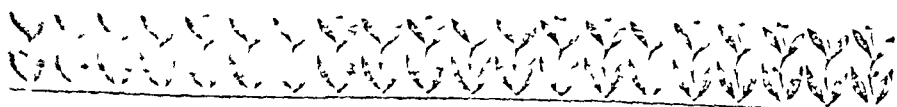
करता हूँ। इसके बावजूद मैं एक पागल हूँ और अपने पागल-पन को छिपाये रखता हूँ। क्योंकि मैं अपने पागलपन से अलग रहना पसन्द नहीं करता।

तू वास्तव मे मेरा दोस्त नही है। मेरे दोस्त! तुझे मैं यह कैसे समझाऊं कि मेरा मार्ग तेरे मार्ग से भिन्न है। फिर भी हम दोनो परस्पर हाथ मे हाथ डाले एक दूसरे के साथ चल रहे है।

: ४ :

बिजूका

एक दिन मैंने एक बिजूके से [illegible] खेत मे खडे थक गये होगे। उसने [illegible] का आनन्द इतना अपूर्व [illegible] महसूस नही होती।

मैंने एक क्षण सोच कर कहा [illegible] मैंने भी इस आनन्द का अनुभव किया है। [illegible] वही लोग जिनके शरीर मे घास फूस भरी हो [illegible] सकते है।"

यह सुनकर मै वहा से चल दिया। [illegible] नही कि वास्तव मे उसने मेरी प्रशसा की या मजाक उडाया। [illegible] वर्ष व्यतीत हो गया और इस अर्से मे वह बिजूका एक दार्शनिक बन चुका था और जब मैं दूसरी बार उसके करीब से गुजरा तो मैंने देखा कि इसके सर पर दो कौवो ने घोसला बना रक्खा है।

: ५ :

स्व प्न च र

मै जिस गाव मे पैदा हुआ उसमे एक स्त्री और उसकी पुत्री रहती थी। इन्हे सोते मे चलने की बीमारी थी। एक रात जब सारे संसार मे निस्तब्धता छायी हुई थी ये मां-बेटी घूमती-घामती अपनी कोहराच्छन्न वाटिका मे जा पहुची और वहा परस्पर मिलीं।

मा ने बेटी से कहा—"हा-हां, मुझे पता चल गया। मेरी शत्रु तू है, जिसने मेरा यौवन नष्ट कर दिया है। तू ही है, जिसने मेरे जीवन-खंडहरो पर अपने जीवन-भवन का निर्माण किया है। क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरा गला घोट देती!"

बेटी ने कहा—"ऐ स्वार्थी बुढ़िया, तू मेरे और मेरे स्वतन्त्र स्वभाव के बीच एक रोड़े के समान है; कौन मेरे जीवन को तेरे मुरझाये हुए जीवन का प्रतिबिम्ब मानेगा। क्या ही अच्छा हो कि ईश्वर तेरे जीवन का अन्त कर दे।" इसी समय मुर्गों ने बाग दी और दोनों नींद से जागीं।

बुढ़िया ने बड़े प्रेम से कहा—"कौन तुम हो प्यारीबेटी!"

पुत्री ने बड़े प्यार से उत्तर दिया, "हा, मेरी प्यारी अम्मा"

बुद्धिमान कुत्ता

एक दिन एक बुद्धिमान कुत्ता [illegible]
पास से गुजरा। उसने देखा [illegible]
है और उसकी तरफ ध्यान नहीं देती। [illegible]
सुनने के लिए रुक गया। फिर उनमें से [illegible]
बिल्ली उठी और अन्य बिल्लियों पर [illegible]
ईश्वर से प्रार्थना करो। क्योंकि जब हम पूरी [illegible]
बार बिनती करेंगी तो आकाश से [illegible]।

जब कुत्ते ने यह बात सुनी तो अपने [illegible] और
मुँह मोडकर यह कहता हुआ चला गया— '[illegible]
मूर्ख बिल्लियो ! क्या यह किताबों मे नहीं लिखा [illegible]
और तुम्हारे बाप-दादो को यह मालूम नहीं कि जब ईश्वर की
पूजा करने और दुआये मागने से बारिश होती है तो आसमान
से चूहे नहीं बल्कि हड्डिया बरसती है।'

: ७ :

दो साधु

एक पहाड पर दो साधु रहते थे। उनका काम ईश्वर की पूजा और आपस मे प्रेम पूर्वक रहने के सिवा और कुछ न था। उनके पास एक मिट्टी का प्याला था और यही उन दोनो की पूंजी थी। एक दिन बडे साधु के दिल मे बदी की रुह दाख़िल हुई। वह छोटे साधु के पास आया और उससे कहा—"हम दोनो को साथ रहते हुए बहुत समय बीत गया और अब अलग होने का अवसर आ गया है। इसलिए आओ हम अपनी सम्पत्ति बाट ले।'

छोटे साधु ने कहा—"तुम्हारा वियोग मेरे लिए असह्य है किन्तु यदि तुम जानाही चाहते हो तो अच्छी बात है।" यह कहकर उसने वह प्याला बड़े साधु के सामने लाकर रख दिया और कहा—"हम इसे आपस मे बाट नही सकते इसलिए यह प्याला आप ही लेले।" बडे साधु ने जवाब दिया कि नही, मै ख़ैरात नही मागना चाहता। मैं अपने हिस्से के सिवा और कुछ नहीं लूगा। हमे यह प्याला आपस मे बाटना ही पडेगा।

छोटे साधु ने कहा—"यदि यह प्याला टूट गया तो हमारे किस काम आयेगा। यदि तुम मज़ूर करो तो आओ पासा डालकर इसका फैसला करले।"

लेकिन बडे साधु ने दूसरी बार कहा—"मैं केवल वही चीज लूंगा जो इन्साफ से मेरे हिस्से मे आयेगी और मै यह पसन्द नहीं करता कि न्याय को भाग्य पर छोड़ दिया जाय। हमे यह प्याला

आदान प्रदान

एक मनुष्य के पास इतनी सुइयां थीं कि इनसे एक मैदान ढक सकता था। एक दिन मरियम उसके पास आई और बोली—"भाई मेरे बेटे के वस्त्र फट गये हैं और मैं मन्दिर मे जाने से पहले उसके कपड़ों की मरम्मत करना चाहती हूँ। क्या तुम मुझे एक सुई दे सकते हो?"

उसने मरियम को सुई न दी। लेकिन आदान-प्रदान के सम्बन्ध में एक विद्वत्ता-पूर्ण व्याख्यान देकर कहा कि मन्दिरमे जाने से पहले अपने बेटे को यह व्याख्यान सुना देना।

: ९ :

सात आपे

रात की सब से खामोश घड़ी मे जब मैं अध सोया पड़ा था—मेरे सातो आपे एक साथ बैठ कर इस तरह काना-फूसी करने लगे—

पहला आपा—"यहा, इस पगले मे मैं इतने बरसों तक रहा हूँ। इस अर्से मे मेरा काम इसके सिवा और कुछ न था कि मैं दिन को उसका दर्द ताजा करू और रात को उसका दु:ख नये सिरे से पैदा करू। ये रोज की मुसीबत मुझसे सही नही जाती और अब मैं बगावत करने पर तुला हुआ हूँ।"

दूसरा आपा—"तुम्हारी तकदीर मुझसे अच्छी है भाई! क्योकि मुझे इस मनुष्य का आनन्दमय आपा बनाया गया है। मैं इसको हसी हसता हूँ और इसकी खुशी की घड़ियो के राग अलापता हूँ और अपने पैरो के तीन-तीन पख लगा कर इसके उज्वल विचारो के साथ नाचता हूँ। अब मैं अपने इस दु:ख-भरे जीवन के विरुद्ध विद्रोह करूगा।"

तीसरा आपा—"और मुझ प्रेमासक्त आपे के विषय मे क्या? मैं तो जघन्य वासनाओ और बहुरूप कामनाओ की उद्दीप्त मूर्त्ति हूँ। यह तो मेरा काम है कि मैं इसके प्रति विद्रोह करूं।"

चौथा आपा—"मैं तुम सब से ज्यादा दु:खी हूँ क्योकि मुझे कुत्सित घृणा और विनाशक भावनाओ के सिवा और कुछ नही दिया गया। मैं, तूफान सदृश आपा, जिसका जन्म नरक

की अन्धेरी गुफाओं मे हुआ, इस पगले की गुलामी का विरोध करूंगा।"

पाँचवा आपा—"मैं (निरन्तर) विचार करने वाला आपा, और (सदा) कल्पना मे मग्न रहने वाला आपा जिसकी तकदीर में अज्ञात और बिना पैदा हुई चीजों की तलाश मे बिना चैन लिये घूमना लिखा है। मैं बगावत करूंगा तुम नहीं।'

छठा आपा—"और मैं काम करने वाला आपा, दीन मज़दूर जो थके मादे हाथो और प्यासी आखों से, अपने दिनो को मूर्तियों मे बदल देता हूँ, और ऐसे तत्वो को, जिनका कोई रूप न हो, नया और स्थायी रूप देता हूँ। मैं इस अथक पगले के विरुद्ध विद्रोह करूंगा।"

सातवा आपा—"कितनी अजीब बात है कि तुम मे से प्रत्येक के भाग्य मे जो लिख दिया है उसे तुम्हे पूरा करना है। काश, कहीं मैं भी तुम्हारी तरह ही मुकर्रर तकदीर वाला आपा होता। परन्तु मेरे भाग्य मे कुछ भी नहीं लिखा है। मैं एक बेकार आपा हूँ और जब तुम जीवन-चक्र-चलाने मे व्यस्त रहते हो तो मैं एक बे-नाम और बे-निशान जगह पर खामोश बैठा रहता हूँ। ए मेरे पड़ौसियो, बताओ भला विद्रोह मुझे करना चाहिए या तुम्हे!"

जब सातवे आपे ने यह कहा तो दूसरे छः आपे उसकी ओर दया-दृष्टि से देखने लगे, परन्तु आगे कुछ न कहा और जैसे-जैसे रात गम्भीर होती गई वैसे ही वे एक नई और खुशी से भरी हुई गुलामी से परिपूर्ण होकर सो रहे।
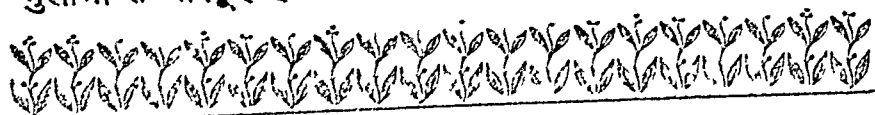
युद्ध

एक रात शाहीमहल मे एक दावत हुई। इस मौके पर एक आदमी आया और अपने आपको शहजादे के सामने पेश किया। सारे मेहमान उसकी तरफ़ देखने लगे। उन्होने देखा कि उसकी एक आंख बाहर निकल आई है और जख्म से खून बह रहा है।

बादशाह ने पूछा—"तुम्हारे साथ यह दुर्घटना कैसे हुई?"

उसने जवाब दिया—"मैं एक पेशेवर चोर हूँ और पिछली रात जब कि चाद भी नही निकला था, मैं एक साहूकार की दुकान में चोरी करने के लिए गया, किंतु भूल से जुलाहे के घर मे पहुँच गया। ज्योही मैं खिडकी मे से कूदा, मेरा सिर जुलाहे के करघे से टकरा गया और मेरी आख फूट गई। ऐ शहज़ादे! मैं अब इस जुलाहे के मामले मे इन्साफ चाहता हूँ।"

यह सुनकर शहजादे ने जुलाहे को तलब किया और यह फैसला दिया कि इसकी एक आंख निकाल दी जाय।

जुलाहा बोला—"ऐ शहजादे! आपका यह न्याय उचित नहीं है कि मेरी एक आख निकलवा रहे हैं। मेरे काम मे दोनो आंखों की जरूरत है ताकि मै उस कपडे को दोनो तरफ देख सकूं, जिसे मैं बुनता हूं। मेरे पडोस मे एक मोची है। उसके दो आंखें हैं। लेकिन उसे अपने काम के लिए दोनो आखो की जरूरत नही।"

: ११ :

लोमड़ी

एक लोमडी ने सुबह के वक्त अपनी छाया पर दृष्टि डाली और कहा—"मुझे आज कलेवे के लिये एक ऊंट मिलना चाहिए।

उसने सुबह का सारा समय ऊट की तलाश मे घूमते हुए व्यतीत कर दिया, लेकिन जब दोपहर को उसने दूसरी बार अपनी छाया देखी तो कहा—मेरे लिए एक चूहा ही काफी होगा।

बुद्धिमान बादशाह

एक बार का जिक्र है कि एक नगर मे, [illegible] वीरानी था एक बादशाह हकूमत करता था। [illegible] लोग उससे डरते थे और उसकी बुद्धि की [illegible] प्रेम करते थे।

उस शहर के बीच मे एक कुआँ था, जिसका पानी [illegible] ठण्डा और मोती की तरह निर्मल था। उस नगर के समस्त निवासी बल्कि स्वय बादशाह और उसके दरबारी उसी कुएँ से पानी पीते थे, क्योकि उसके सिवा शहर मे कोई दूसरा कुआँ भी न था। एक रात को जब सब लोग सोये हुए थे, एक चुडैल शहर मे घुस आई और एक अद्भुत औषधि की सात बूद कुएँ मे डाल दी और बोली—इसके बाद जो मनुष्य इस कुएँ का पानी पीयेगा, वह पागल हो जायगा।

दूसरे दिन बादशाह और मन्त्रियो के अतिरिक्त नगर के समस्त निवासियो ने कुए का पानी पिया और चुडैल की भविष्य-वाणी के अनुसार पागल हो गये।

उस दिन शहर के तग गली-कूचो और बाजारो मे लोग एक दूसरे के कान मे यही कहते रहे कि हमारे बादशाह और प्रधान मन्त्री की बुद्धि नष्ट होगई है। हम इस अपाहिज बादशाह के शासन को सहन नहीं कर सकते और इसे तख्त से उतार देगे।

जब शाम हुई तो बादशाह ने सोने के एक बर्तन मे इस कुएँ से पानी मँगवाया और जब पानी आया तो उसने स्वय भी
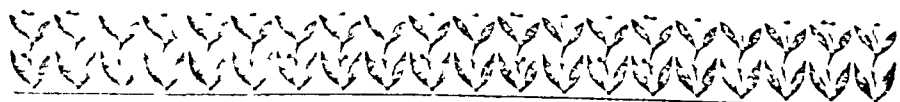
उसे पिया और अपने प्रधान मन्त्री को भी पिलाया। फिर क्या था, शहर वीरानी में खुशी के बाजे बजने लगे। क्योंकि लोगो ने देखा कि उनके बादशाह और प्रधान मन्त्री की बुद्धि ठिकाने आगई है।

[illegible]

तीन आदमी [illegible]

उनमे से एक जुलाहा दूसरा बढ़ई और [illegible]

जुलाहे ने कहा — 'मैने [illegible]

दो अशर्फियो मे बेचा है । आओ, [illegible]'

बढ़ई ने कहा— 'मैने [illegible]

है, इसलिए हम शराब के साथ [illegible]

मज़दूर ने कहा —"मैने आज केवल [illegible]

परन्तु मृतक के वारिसो ने मुझे दुगने पैसे दिये है । [illegible]

हम थोडी मिठाई भी मगावे ।" उस रात [illegible]

रौनक रही और तीनो मनुष्य शराब, कबाब और मिठाइया [illegible]

रहे, क्योकि वह तीनो बड़े आनन्द मे थे ।

कहवाखाने का स्वामी खुश होकर अपनी पत्नी की ओर देख रहा था क्योकि आज के महमान दिल खोल कर खर्च रहे थे ।

जब सब कहवाखाने से निकले तो चाद निकल आया था । और वह सडक पर गाते-चिल्लाते और जोर-जोर से बाते करते हुए चले जा रहे थे । दूकानदार और उसकी पत्नी कहवाखाने के दरवाजे पर खडे हुए उन्हे देख रहे थे ।

पत्नी ने कहा—"यह लोग कितने उदार और मौजी स्वभाव के है । अगर यह उदाराशय ग्राहक रोज हमारे यहा आवे तो हमारे

पुत्र को शराब की दूकान न करनी पड़े और हम अपनी आमदनी से उसे उच्च शिक्षा दिला सकते हैं। वह एक पादरी भी बन सकता है।

: १५ :

दूसरी भाषा

अपने जन्म के तीन दिन बाद जब मैं रेशमी पालने मे पडा हुआ अपने चारो ओर नये ससार को आश्चर्य से देख रहा था, तो मेरी मां ने अन्ना से पूछा—"कैसा है मेरा लाल ?"

अन्ना ने जवाब दिया—"देवि, बच्चा बहुत अच्छा है। मैंने उसे तीन बार दूध पिलाया है। मैंने आज तक ऐसा बच्चा नही देखा जो इतना खुश हो।"

मैं व्याकुल होकर चिल्ला उठा—"मा, यह सच नही। क्योंकि मेरा बिछौना सख्त है और मैंने जो दूध पिया है वह मेरे मुँह को कड़वा लगा है और मेरी अन्ना के वक्ष की गन्ध मेरे लिए बड़ी कष्टप्रद है। मैं बड़ा दुःखी हूँ।

लेकिन मेरी बात न मेरी मा समझ सकी, न मेरी अन्ना। क्योंकि मैं जिस भाषा मे बोल रहा था वह संसार की भाषा नहीं थी। वह उस दुनिया की ज़बान थी जहा से मैं आया था।

इक्कीसवें दिन हमारे यहा मुल्ला आया और उसने मेरी मा से कहा—"तुम्हे खुश होना चाहिए क्योंकि तुम्हारा बेटा जन्मजात धर्मशील है।"

उसकी यह बाते सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने मुल्ला से कहा—"फिर तुम्हारी स्वर्गीय माता को अफ़सोस होना चाहिए। क्योंकि तुम जन्मजात धर्मशील नही थे।" लेकिन मुल्ला भी मेरी भाषा को न समझ सका।

: १६ :

अ ना र

एक बार जब मैं एक अनार के हृदय मे वास करता था, तो मैंने एक बीज को यह कहते हुए सुना—"किसी दिन मैं एक वृक्ष बन जाऊंगा, वायु मेरी टहनियों मे राग गायेगी, सूर्य की किरणें मेरे पत्तो पर नृत्य करेंगी और मैं प्रत्येक ऋतु में सुन्दर और स्वस्थ बना रहूँगा।"

फिर दूसरा बीज बोला—"जब मैं तुम्हाही तरह नवयुवक था तो मेरे भी यही विचार थे परन्तु अब, जब कि मैं सारी वस्तुओं का ठीक-ठीक अनुभव कर सकता हूँ, तो पाता हूँ कि मेरी वह सब आशाए निराधार थी।

तीसरा बीज बोला—"हम मे कोई भी बात ऐसी नहीं है जिससे हमारा भविष्य उज्ज्वल प्रतीत हो।"

चौथे ने कहा—"परन्तु एक आशापूर्ण भविष्य के बिना हमारा केवल एक स्वाग होगा।"

पाचवे ने कहा—"जब हम इस बात से ही बेख़बर हैं कि हम स्वयं क्या हैं, तो फिर इस बात पर विवाद करना ही निरर्थक है कि हम भविष्य मे क्या बनेगे।"

छटे ने कहा—"हम जो कुछ है, वही सदैव रहेगे।"

सातवे ने कहा—"मुझे भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूरा-पूरा ज्ञान है। परन्तु मैं उन्हे शब्दो द्वारा वर्णन करने मे असमर्थ हूँ।'

इसके बाद आठवा बोला—"और फिर नवा और दसवा यहा तक कि सारे बीज इस वाद-विवाद मे जुट गये। मैं इन अनगिनत आवाजो मे किसी के भी शब्द स्पष्ट नही सुन सका, इसीलिए मैं उस दिन एक कली के हृदय मे बैठ गया जिसमे बीज भी थोड़े है और जो ज़्यादा बातचीत भी नही करते।

: १७ :

दो पिंजड़े

मेरे पिता के बाग़ में दो पिंजड़े हैं। उनमें से एक में शेर बन्द है जिसे मेरे पिता के गुलाम नानिवा के रेगिस्तान से पकड़ कर लाये थे, दूसरे में एक निस्संगीत गौरैया।

प्रत्येक दिन सुबह के वक्त गौरैया सिंह से पुकार कर कहती है—"भैया कैदी! तुम्हारे लिए आज की प्रातः मुबारिक हो।"

: १८ :

तीन चींटियां

एक आदमी धूप मे पड़ा सो रहा था कि तीन चींटियां उसकी नाक पर आ इकट्ठी हुई और अपने-अपने खानदान की प्रथा के अनुसार अभिवादन करने के बाद परस्पर वार्तालाप करने लगी।

पहली चींटी ने कहा—"मैंने इन पहाडो और घाटियो से ज्यादा बंजर जगह और कोई नही देखी। मैंने यहा सारे दिन दानो की तलाश की है। लेकिन मुझे एक दाना भी नहीं मिला।"

दूसरी चींटी ने कहा—"मुझे भी कुछ नही मिला यद्यपि एक-एक चप्पा छान मारा। मेरे ख़याल से यह वही कोमल और अस्थिर भूमि है जिसके बारे मे हमारे जाति वाले कहते है कि यहा कुछ पैदा नही होता।"

इसके बाद तीसरी चींटी ने अपना सिर उठाया और कहा "मेरी सहेलियो! इस समय हम बड़ी चींटी की नाक पर बैठे है। जिसका शरीर इतना बडा है कि हम उसे नही देख सकते। इसकी छाया इतनी विस्तृत है कि हम उसका अनुमान नही कर सकते। इसकी आवाज इतनी ऊंची है कि हमारे कान इसे सहन नही कर सकते और वह हर जगह मौजूद है।"

जब तीसरी चींटी ने यह बात कही तो दूसरी चींटियो ने एक दूसरे को देखा और ज़ोर से हसी। ठीक उसी समय आदमी नींद मे हिला। उसने सोते-सोते में अपने हाथ से नाक को खुजलाया और तीनो चींटिया पिस कर रह गईं।

: १९ :

कब्र खोदने वाला

एक बार जब मैं, एक मृतक दास को दफ़न कर रहा था, तो कब्र खोदनेवाला मेरे पास आया और बोला—"जितने भी लोग यहां दफ़न करने के लिए आते हैं, उनमें से, मैं सिर्फ़ तुम्हे पसन्द करता हूं।"

मैंने कहा, "यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन आख़िर तुम मुझे क्यों पसन्द करते हो?"

उसने जवाब दिया—"बात यह है कि और लोग तो यहां रोते हुए आते हैं और रोते हुए जाते हैं। मगर तुम हंसते हुए आये और हंसते हुए जा रहे हो।"

: २० :

मन्दिर की सीढ़ियों पर

कल शाम मैंने मन्दिर की संगमरमर की सीढ़ियों पर एक स्त्री को बैठे देखा। उसके दोनों तरफ दो मनुष्य बैठे हुए थे। उस स्त्री का एक गाल पीला पड़ रहा था और दूसरे पर लाली दौड़ रही थी।
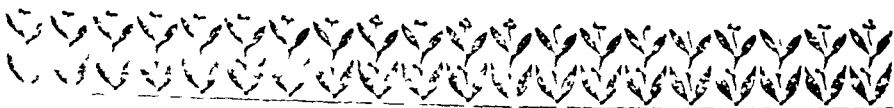
पवित्र नगर

मैं अपने यौवन-काल मे सुना करता था कि एक ऐसा शहर है, जिसके निवासी ईश्वरीय पुस्तको के अनुसार धार्मिक-जीवन व्यतीत करते है। मैंने कहा—"मैं इस शहर की ज़रूर खोज करूंगा और उससे कल्याण-साधन करूंगा।"

यह शहर बहुत दूर था। मैंने अपने सफर के लिए बहुत-सा सामान जमा किया। चालीस दिन के बाद मैंने उस शहर को देख लिया और इकतालीसवे दिन उस शहर मे दाखिल हुआ।

मुझे यह देख कर बडा आश्चर्य हुआ कि नगर के सब निवासियो के केवल एक हाथ और एक आख थी।

मैंने यह भी अनुभव किया कि वह स्वयं भी आश्चर्य मे डूबे हुए हैं। मेरे दो हाथो और दो आखो ने उन्हे आश्चर्य मे डाल दिया था। इसलिए जब वह मेरे सम्बन्ध मे आपस मे बातचीत कर रहे थे तो मैंने एक से पूछा—"क्या, यह वही पवित्र नगर है, जिसका प्रत्येक निवासी धार्मिक-जीवन व्यतीत करता है।"

उन्होने उत्तर दिया—"हा, यह वही नगर है।"

मैंने पूछा—"तुम्हारी यह दशा क्यो कर हुई ! तुम्हारी दाहिनी आख और दाहिना हाथ क्या हुए ?"

वह मेरी बात से बहुत प्रभावित हुआ और बोला—"आ, और देख।"

वह मुझे एक देवालय मे ले गये, जो शहर के बीच मे स्थित

था। मैंने उस देवालय के चौक में हाथों और आँखों का एक बड़ा ढेर लगा देखा। वह सब गल-सड़ रहे थे। यह देख कर मैंने कहा—"अफसोस, किसी निर्दयी विजेता ने तुम्हारे साथ यह अत्याचार किया है!

इतना सुन कर उन्होंने आपस में धीरे-धीरे बातचीत करनी शुरू की और एक वृद्ध आदमी ने आगे बढ़कर मुझ से कहा—"यह हमारा काम है। किसी विजेता ने हमारी आँख व हाथ नहीं काटे। ईश्वर ने हमें अपनी बुराइयों पर विजय प्रदान की है। यह कहकर वह मुझे एक ऊँचे स्थान पर ले गया। बाकी सब लोग हमारे पीछे थे। यहाँ पहुँचकर मम्बर के ऊपर एक लेख दिखाया, जिसके शब्द यह थे.—

यदि तुम्हारी दाहिनी आँख तुम्हें ठोकर खिलाये तो उसे बाहर निकाल फेंको। क्योंकि सारे शरीर के नर्क में पड़े रहने की अपेक्षा एक अंग का नष्ट होना अच्छा है। और यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हें बुराई करने के लिए विवश करे तो उसे भी काटकर फेंक दो ताकि तुम्हारा केवल एक अंग नष्ट हो जाय और सारा शरीर नर्क में न पड़ने पाये।

यह लेख पढ़ कर मुझे सारा रहस्य मालूम हो गया। मैंने मुँह फेरकर सब लोगों को सम्बोधन किया और कहा—"क्या तुममें कोई पुरुष या स्त्री ऐसा नहीं जिसके दो हाथ और दो आँखें हों?

सब ने उत्तर दिया—'नहीं कोई नहीं।" यहाँ बालकों के अतिरिक्त, जो कम उम्र होने के कारण इस लेख को पढ़ने और इसकी आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने में असमर्थ हैं,
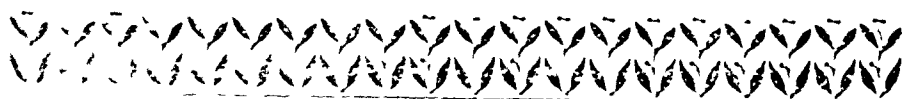
वही बच्चे हैं। कोई मनुष्य नहीं।"

जब हम देवालय से बाहर आये तो मैं तुरन्त इस पवित्र नगर से भाग निकला, क्योंकि मैं बच्चा नहीं था और उस शिला-लेख को अच्छी तरह पढ़ सकता था।

: २२ :

नेकी और बदी का फरिश्ता

नेकी और बदी के फरिश्ते पहाड की चोटी पर मिले ।

नेकी के फरिश्ते ने कहा—"आज की सुबह तुम्हे आनन्द-दायक हो ।"

बदी के फ़रिश्ते ने इसका कोई उत्तर न दिया ।

नेकी के फ़रिश्ते ने फिर कहा—"आज आपकी तबियत कुछ अच्छी नही मालूम देती ?'

बदी के फरिश्ते ने कहा-"बहुत दिन से लोग मुझे तुम्हारी जगह समझने लगे हैं । मुझे तुम्हारे ही नाम से पुकारते है और तुम्हारा जैसा व्यवहार करते है । यह बात मुझे बहुत नागवार है ।'

नेकी के फ़रिश्ते ने कहा—"मुझमे भी तो लोगो को तुम्हारा धोखा हुआ है और वह मुझे तुम्हारे नाम से पुकारने लगे है ।"

यह सुनकर बदी का फरिश्ता मनुष्यो की बेअक्ली पर घृणा प्रकट करता हुआ वहा से चला गया ।

: २३ :

प रा ज य

पराजय, मेरी पराजय, मेरी तनहाई, मेरा एकाकीपन !

तू मुझे हजारों विजयों से भी प्यारा है।

और मेरे हृदय के लिए, सारे संसार के वैभव से मीठा है।

पराजय, मेरी पराजय, मेरे आत्म-बोध, मेरे मुकाबला करने के साहस !

तेरे ही वजह से मैं जानता हूँ कि मैं अभी युवक हूँ और मेरे कदमों मे तेज़ी है।

और एक क्षण में मुरझाने वाली सफलताओं के जाल मे नहीं फंसता।

तुझ में मैंने तनहाई (अकेलेपन का आनन्द) पाई है।

और लोगों ने मुझसे बचने और घृणा करने का सुख भी प्राप्त किया है।

पराजय, मेरी पराजय, मेरी चमकती तलवार, मेरी ढाल !

मैंने तेरी आंखों मे पढ़ा है कि राज-सिंहासन पर बैठना गुलामी का चिह्न है।

और (दूसरों से) पहचाने जाना खाक मे मिल जाने के बराबर है।

और पकड़ मे आजाना फलने-फूलने की अन्तिम सीमा है।

और पके फल की तरह टपक कर गल-सड़ जाना है।

पराजय, मेरी पराजय, मेरे बहादुर साथी ! तू ही मेरे गीत,

मेरी आहे, और मेरी खामोशी की आवाज़ सुनेगा।

और तेरे सिवा अन्य कोई भी मुझसे परो की फड़फड़ाहट की ज़िक्र न करेगा।

इस समुद्र की आवाज (की चर्चा न करेगा)।

और (न तेरे सिवा अन्य कोई) उन पहाड़ो का (ज़िक्र करेगा) जो रात को जलते हैं।

हा, केवल तू ही मेरी पथरीली आत्मा की सवारी करेगा।

पराजय, मेरी पराजय, मेरे न मिटने वाली हिम्ममत।
मैं और तू मिलकर तूफान के साथ कहकहे लगावेगे।
और साथ ही उन सबकी कब्र खोदेगे, जो हममे से मरेंगे।
हम धूप मे पक्के इरादे के साथ खड़े होगे।
और हम (दुनिया के लिए) खतरनाक बन जावेगे।
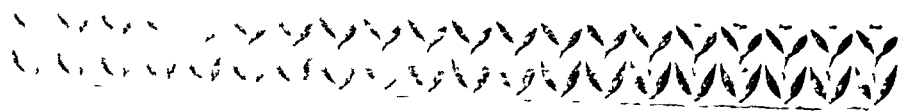
रात और पागल

"मैं तेरे ही जैसा हूँ। ओ रात्रि! नग्न और अंधेरी! मैं एक ऐसे तपते हुए मार्ग पर चलता हूँ जो मेरे दिन के स्वप्नो से उच्चतर है और मेरा पांव जमीन को छूता है तो उससे एक प्रकांड वान-वृक्ष (ओक का पेड) उठ पडता है।"

"नहीं, तू मेरे जैसा नही है ऐ पगले! क्योंकि तू अब भी पीछे फिर कर देखता है कि रेत पर तूने कितने बडे-बडे पद-चिह्न छोडे है!'

"मैं तेरे जैसा हूँ ऐ रात्रि! खामोश और गम्भीर। मेरे एकाकीपन(तनहाइयां)के हृदय मे एक देवी खटोले पर लेटी है, जिसके पेट से पैदा हुआ बच्चा स्वर्ग को नरक से मिलाता है।"

"नहीं, तू मेरे जैसा नही है। ओ पागल! क्योंकि तू दुःखो की कल्पना से कांप उठता है और नरक के गीतो से भयभीत हो जाता है।"

"मैं तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! डरावना और भयानक! क्योंकि मेरे कान विजित जातियो के क्रंदन और भूले हुए देशो की चीखो और भूले हुए देशो की आहो से भरे हैं।"

"नहीं, तू मेरे जैसा नहीं है ओ पागल! क्योंकि तू अपने छोटे मन को तो अपना साथी बना लेता है लेकिन अपने विराट स्वरूप से दोस्ती नहीं कर सकता।"

"मैं तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! क्रूर और अत्याचारी! क्योंकि

मेरा हृदय समुद्र मे जलते हुए जहाजो से रोशन है और मेरे ओठ वध किये हुए वीरो के खून से भीगे हुए है।

"तू मुझ जैसा नही है ओ दीवाने! क्योकि तेरे हृदय मे एक आत्मीय की कामना है और तू अपने लिए कोई नियम नही बना सकता।'

"मै तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! प्रसन्न और आनन्द, क्योकि जो मेरी छाया मे निवास करता है वह एक अछूती मदिरासे उन्मत्त है। और मेरी अनुचरी खुशी से (निःसंकोच) गुनाह करती है।'

"तू मेरे समान नही है ओ पागल! क्योकि मेरी आत्मा पर सात पर्दो का आवरण चढा हुआ है। और तेरा मन तेरे वश मे नही है।"

"मै तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! सन्तोषी और कामना-पूर्ण क्योकि मेरे दिल मे हजारो मृत प्रेमी मुरझाये हुए चुम्बनो का कफन पहने दफन है।

हा पगले! क्या तू मेरे जैसा है? क्या तू (वास्तव मे) मेरे जैसा है! क्या तू तूफान को घोडा बनाकर सवारी करता है? क्या बिजली को तलवार की तरह (हाथ मे) लेता है?

मेरे समान ओ रात्रि! तेरी तरह बलवान और उच्च! [illegible] ओं के ढेर पर बना है और मेरा पल्ला चूमने [illegible] गुजरते है लेकिन मेरे चेहरे को देखने के [illegible]

[illegible] मेरे अन्धतम हृदय के लाल,

क्या तू मेरे निरंकुश विचारों को समझता है और मेरी व्यापक भाषा बोलता है ?"

"हां, हम जोड़िया भाई हैं, रजनी ! क्योंकि तू अन्तरिक्ष पैदा करती है और मैं अपना दिल खोल रखता हूं।"

चेहरे

मैंने हजारों आकृति वाला एक चेहरा देखा है। और ऐसा चेहरा भी देखा है जिसका एक ही रुख था। जैसे वह सांचे में ढला है।

मैंने एक चेहरा देखा है जिसकी चमक की तह में, मैंने उसकी भीतरी कुरूपता देख पाई थी। और ऐसा चेहरा देखा है जिसकी खूबसूरती देखने के लिए मुझे उसकी दमक का परदा उठाना पड़ा था।

मैंने एक बूढ़ा चेहरा देखा है जो शून्यता की रेखाओं से परिपूर्ण था और मैंने ऐसा चिकना चेहरा भी देखा है जिस पर [illegible] मुर्दा हुई थीं।

मैं (इन सब) चेहरों से (अच्छी तरह) वाकिफ हूँ। [illegible] मैं इन्हें उस परदे (के भीतर) से देखता हूँ जो मेरी आंखें [illegible] और इनके असल रूप को समझ लेता हूँ।

: २६ :
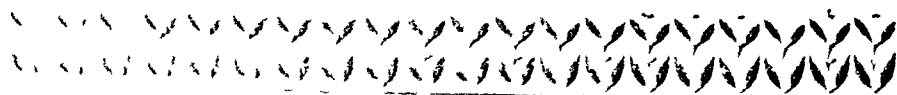
बड़ा समुद्र

मेरी आत्मा और मैं बड़े समुद्र मे स्नान करनेके लिए गये। जब हम किनारे पर पहुँचे तो हम (किसी) गुप्त और निर्जन स्थान की खोज करने लगे।

जैसे हम (आगे) चले हमने देखा कि एक आदमी भूरी चट्टान पर बैठा हुआ अपने झोले से चुटकी-चुटकी नमक निकाल कर समुद्र में फेंक रहा है।

"यह निराशा-वादी है।" मेरी आत्मा ने कहा—"यहा हम स्नान नहीं कर सकते। आओ यह जगह छोड दे।"

हम आगे चलते गये और एक टापू के पास पहुँच गये। यहा हमने देखा कि एक आदमी सफेद चट्टान पर खडा है। उसके हाथ मे एक जडाऊ डिब्बा है जिसमे से वह चीनी निकाल-निकाल कर समुद्र मे फेंक रहा है।

"यह आशावादी है"— मेरी आत्मा ने कहा— "(इसलिए) वह भी हमारे नग्न-शरीर को न देख पावे।"

हम और आगे बढ़े। किनारे पर एक आदमी को देखा जो मरी मछलियां चुन-चुन कर बडी नर्म-दिली से उल्टा समुद्र मे फेंका रहा था।

मेरी आत्मा ने कहा—"हम इसके सामने भी नहीं नहा सकते (क्योंकि) यह (एक) दयालु विश्व-मित्र है।"

हम और आगे बढ़े, देखा कि एक आदमी अपनी छाया
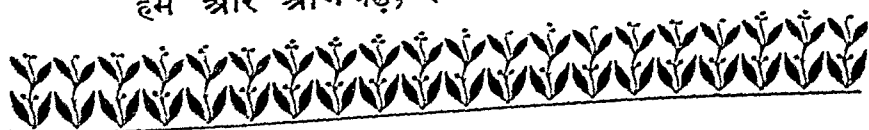
को रेत पर अंकित कर रहा है। लहरें आकर उसे मिटा देती है। लेकिन यह बराबर अपने कार्य मे लगा हुआ है।

"यह रहस्यवादी है।" मेरी आत्मा ने कहा— "हमें उसे भी छोड देना चाहिए।"

आगे चले तो देखा एक आदमी समुद्र के झागों को एकत्र करके सेलखडी के प्याले मे डाल रहा है।

"यह आदर्शवादी है।" मेरी आत्मा ने कहा—"यह हमारी नग्नता कदापि न देखने पावे।"

तब हम और आगे चले, अकस्मात एक आवाज सुनी। (कोई चीख कर कह रहा है) "यही है समुद्र, यही है गहरा समुद्र, यही है विशाल और शक्तिशाली समुद्र, और जब हम उस आवाज के पास पहुँचे तो देखा कि एक आदमी समुद्र की तरफ पीठ किये खडा है और एक सीप को कान से लगाये उसकी आवाज सुन रहा है।

मेरी आत्मा ने कहा, "चलो आगे बढो, यह यथार्थवादी है। जो किसी बात (के रहस्य) को पूरी तरह न समझने पर उस से मुँह मोड लेता है। और उस विषय के एक टुकडे पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देता है।"

इसी तरह आगे बढते गये, (थोडी दूर पर) चट्टानो के बीच एक आदमी को रेत मे सिर छिपाये हुए देखा। मैने अपनी आत्मा से कहा—"(निस्सन्देह)हम यहा स्नान कर सकते है क्योकि यह हमे देख नही सकता।"

"नही"— मेरी आत्मा ने कहा—"यह तो उन सबसे

ख़तरनाक है। क्योंकि यह उपेक्षा करता है।"

तब मेरी आत्मा के मुख पर बडी निराशा छा गई और उसने (करुण स्वर मे) कहा—"हमे यहा से चलना चाहिए क्योंकि यहा कोई ऐसा गुप्त और एकान्त स्थान नहीं है, जहा हम स्नान कर सके। मैं उस हवा को अपनी सुनहरी जुल्फो से न खेलने दूँगी और न उस हवा में अपने सफेद सीने को खोलूंगी और न उस प्रकाश को अपनी पवित्र नग्नता उघारने दूँगी।"

तब हम उस बड़े समुद्र को छोड कर दूसरे विशाल सागर की खोज करने चल पड़े।

सूली पर

मैंने लोगों से चिल्ला कर कहा— मैं सूली [illegible]

उन्होंने कहा—"हम तुम्हारा खून अपनी गर्दन [illegible]

मैंने जवाब दिया—"तुम पागलों को सूली [illegible] बिना किस तरह उन्नति कर सकते हो।

उन्होंने मेरी बात मान ली और मुझे सूली [illegible] गया। सूली पर चढने से मुझे शांति मिली।

और जब मैं पृथ्वी और आकाश के बीच लटका [illegible] तो उन्होंने मुझे देखने के लिए, अपने सिर ऊपर उठाये। [illegible] उनका सिर ऊंचा हुआ। (वे उन्नत हुए) क्योंकि [illegible] उनका सिर कभी ऊपर न उठा था।

लेकिन जब वे मेरी तरफ सिर उठाये देख रहे थे तो उनमें से एक ने पूछा—"तुम किस कर्म का प्रायश्चित्त कर रहे हो।"

दूसरे ने चिल्ला कर कहा—"तुमने किस उद्देश्य से अपना बलिदान किया।"

तीसरे ने कहा—"क्या तेरा यह ख्याल है कि तू इस कीमत (कुरबानी) से इस दुनिया में बड़ाई (शोहरत प्रसिद्धी) हासिल करेगा।

तब एक चौथे ने कहा—"देखो यह कैसा मुसकरा रहा है। क्या कोई मनुष्य इतनी बड़ी तकलीफ (जुल्म) को भी माफ कर सकता है!

मैंने इन सब को जवाब देते हुए कहा—

"तुम सिर्फ इतना ही याद रक्खो कि मैं मुसकराता था। मैंने कोई प्रायश्चित नहीं किया और न मैंने कोई कुरबानी (बलिदान) की और न मैं कीर्ति का इच्छुक हूँ। तुमने कोई ऐसा अपराध नहीं किया जिसे मैं क्षमा करूं। मैं प्यासा था और मैंने तुमसे प्रार्थना की कि तुम मेरा खून मुझे पिला दो। क्यों कि पागल की प्यास उसके खून के सिवा और किसी चीज़ से नहीं बुझ सकती। मैं गूंगा था सो मैंने मुंह के लिए जख्म मागे। मैं इन्हीं (मृतलोक की) दिन-रातों में कैद था। इसलिए मैंने इनसे बड़े (बृहत्) दिन-रातों का दरवाजा तलाश कर लिया।"

"लो, अब मैं जाता हूँ—जिस तरह और सूली चढने वाले चले गये। यह न समझना कि हम सूली चढ़ने से उकता गये हैं।"

क्योंकि हम इससे बडे आकारो और इससे बडी पृथ्वी के बीच, इससे बडे मनुष्य-समुदाय के द्वारा बार-बार सूली पर चढते रहेंगे।

ज्योतिषी

मैंने और मेरे मित्र ने एक अन्धे आदमी को मन्दिर की छाया मे बैठे हुए देखा। मेरे मित्र ने मुझे बताया कि—"यह हमारे देश का सबसे बुद्धिमान मनुष्य है।"

मै अपने मित्र को छोडकर उसके पास गया और उसे प्रणाम किया। फिर हम बातचीत करने लगे। कुछ देर बाद मैंने पूछा—"माफ कीजिये, आप कब से अन्धे हुए।"

उसने जवाब दिया—"मैं तो जन्म से अन्धा हूँ।"

मैंने पूछा—"आपने किस शास्त्र का अध्ययन किया है?"

वह बोला—"मैं ज्योतिषी हूँ।" फिर उसने अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा—"हा मैं आकाश-मडल के समस्त सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रो का निरीक्षण करता रहता हूँ।"

बड़ी तमन्ना

यहा मैं अपने भाई "पहाड" और अपनी बहन "जल-राशि" के बीच बैठा हूँ।

हम तीनो एकात मे एक हैं। और जिस प्रेम ने हमे आपस मे बाध रक्खा है वह गहरा, सबल और अनोखा है। उसकी गहराई मेरी बहन की गहराई से भी अधिक है। उसकी शक्ति के सामने मेरे भाई की शक्ति तुच्छ है। और वह मेरे पागलपन से भी ज्यादा निराली है।

शताब्दिया बीत चुकी हैं। जब कि पहले प्रातःकाल मे हम एक-दूसरे से परिचित हुए और यद्यपि हम कितनी ही दुनियाओ की पैदायश, जवानी और मृत्यु के दृश्य देख चुके हैं, फिर भी, हम जवान और उत्साहपूर्ण हैं। यद्यपि हमारे मन मे इच्छाये और अभिलाषाये बनी हुई हैं, लेकिन फिर भी हम अकेले हैं। कोई पास नहीं आता। यद्यपि हम कालान्तर से एक-दूसरे से लिपटे हुए हैं, फिर भी हमे चैन नहीं। दबाई हुई ख्वाहिश और रोके हुए जोश को चैन कहा!

यह अग्निदेव कहा से आयेगा, जो मेरी बहन के बिस्तर को गर्म करेगा और वह कौन-सी लहर है जो मेरे भाई के दिल को ठण्डा करेगी। और वह कोनसी सुन्दरी है जो मेरे हृदय पर राज्य करेगी।

रात के सन्नाटे मे मेरी बहन अग्निदेव की याद मे बडबडाती

रहती है। और मेरा भाई ठण्डक पहुँचाने वाली देवी को पुकारता रहता है। लेकिन मैं नींद की हालत मे किसे पुकारता हूँ मुझे मालूम नही।

यहा मैं अपने भाई "पहाड" और बहन "जल-राशि" के बीच बैठा हूँ। हम तीनों एकात मे एक हैं। और जिस प्रेम ने हमे एकता मे बाध रक्खा है, वह गहरा, मजबूत और अनोखा है।

घास के तिनके ने कहा

घास के एक तिनके ने पतझड़ के गिरे हुए पत्ते से कहा—"तुम गिरते वक्त शोर क्यों करते हो। तुम्हारे इस शोर से मेरे सुख-स्वप्न मे बाधा पड़ती है।"

पत्ता क्रोधित होकर बोला—"ओ नीच, अधोगति को प्राप्त, गान-विद्या से वंचित चिड़चिड़े तिनके जब तू ऊँचे वातावरण मे नहीं रहता तो तू राग की लय को क्या जाने!"

तब पतझड़ का पत्ता जमीन पर पड़ गया और सो गया। जब बहार का मौसम आया तो उसकी आंख खुली। परन्तु अब वह (स्वयं ही) घास का तिनका बन चुका था।

फिर पतझड़ का मौसम आया। तिनका जाड़े की मीठी नींद सो रहा था कि चारो तरफ से उस पर पत्तियां झड़ने लगीं। तब वह गुनगुनाया।

"यह पतझड़ के पत्ते कितना शोर मचाते है और मेरे शिशिर-स्वप्न मे बाधा डालते हैं!"

आँख

एक दिन आँख ने कहा—"मै इन घाटियो के परे नीले धुन्द से ढके, पहाडो को देख रही हूँ। क्या वह खूबसूरत नही ?"

कान ने सुना और थोडी देर के बाद कहा—"लेकिन पहाड है कहा ? मुझे तो वह सुनाई नही देता !

तब हाथ ने कहा—"मैं इसे अनुभव करने और छूने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा हूँ। मुझे कोई पहाड नही मिलता।"

नाक ने कहा—"यहा कोई पहाड नही, क्योकि मुझे उसकी बू (गन्ध) नही आती।"

तब आँख दूसरी तरफ देखने लगी और वे (तीनो) उसके आश्चर्यजनक अनुभव की चर्चा करने लगे।

उन्होंने कहा—"मालूम होता है, आँख को अवश्य कुछ भ्रम हो गया है।

: ३२ :

दो विद्वान

अफ़कार नामक एक प्राचीन नगर मे किसी समय दो विद्वान रहते थे। उनके विचारो मे बडी विभिन्नता थी। एक-दूसरे की विद्या की हँसी उडाते थे। क्योंकि उनमें से एक आस्तिक था और दूसरा नास्तिक।

एक दिन दोनो बाजार मे मिले और अपने अनुयायिओं की उपस्थिति मे ईश्वर के अस्तित्व पर बहस करने लगे। घण्टो बहस करने के बाद एक-दूसरे से अलग हुए।

उसी शाम को नास्तिक मन्दिर में गया और वेदी के सामने सिर झुका कर अपने पिछले पापो के लिए क्षमा-याचना करने लगा। ठीक उसी समय दूसरे विद्वान ने भी, जो ईश्वर की सत्ता मे विश्वास करता था, अपनी पुस्तकें जला डालीं। क्योंकि अब वह नास्तिक बन गया था।

जब मेरा शोक पैदा हुआ

जब मेरा शोक पैदा हुआ (तो) मैंने बड़े यत्न से पाला, और बड़ी सावधानी से उसकी रक्षा की।

और मेरा शोक अन्य सब जीव-धारियों की तरह पलने लगा। शक्तिशाली, सुन्दर और हर्षपूर्ण।

हम एक-दूसरे को प्यार करते थे। मै और मेरा शोक। और हम अपने चारो तरफ की दुनिया को मोहब्बत करते थे। क्योकि शोक के दिल मे बड़ी करुणा थी। और मेरा हृदय भी 'शोक' के कारण दया से भर गया था।

और जब मैं और मेरा 'शोक' आपस मे बात करते थे तब हमारे दिनो को पंख निकल आते थे और हमारी राते स्वप्नवत् हो जाती थी। क्योकि शोक बात करने मे बड़ा निपुण था और मैं भी इसकी वजह से बातूनी होगया था।

और जब हम दोनो एक साथ गाते थे। मैं और मेरा शोक तो हमारे पड़ौसी अपनी खिडकियो मे बैठ कर सुनते। क्योकि हमारे गीत समुद्र की तरह गहरे थे। और हमारे स्वरो मे आश्चर्यजनक स्मृतिया छिपी हुई थी।

और जब मै और मेरा 'शोक' साथ-साथ टहलते, तो लोग हमें प्यार की दृष्टि से देखते और हमारे सम्बन्ध मे आहिस्ता-आहिस्ता मीठे शब्द कहते। और कुछ लोग ऐसे भी थे जो हमसे ईर्षा करते थे। क्योंकि मेरा शोक श्रेष्ठ था। और मुझे भी (अपनी

[illegible] का) गर्व था।

किन्तु अन्य सभी नाशवान वस्तुओं की तरह एक दिन मेरा शोक भी चल बसा और मैं मातम करने के लिए अकेला रह गया।

और (अब) मैं बोलता हूँ तो मेरे शब्द मेरे कानों को भार मालूम होते हैं।

और मैं गाता हूँ तो मेरे पड़ौसी सुनने नहीं आते और जब मैं रास्ते में चलता हूँ तो कोई मेरी ओर आँख उठाकर नहीं देखता।

अब सिर्फ नींद में मुझे यह दर्द भरी आवाज सुनाई देती है—"देखो, यह वह मनुष्य पड़ा है जिसका 'शोक' मर चुका है।"

जब मेरा हर्ष पैदा हुआ

जब मेरा हर्ष पैदा हुआ तो मैने उसे गोद मे उठा लिया और छत पर खडा होकर पुकारने लगा—"आओ, मेरे पडोसियो ! देखो, आज मेरे घर 'हर्ष' का जन्म हुआ है। आओ, इस आनन्द-दायक वस्तु को देखो जो सूर्य के प्रकाश मे हस रही है।

किंतु मेरा एक भी पडौसी मेरे 'हर्ष' को देखने के लिए नही आया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

सात पूर्णिमाओ तक मै हर रोज छत पर खडे होकर अपने हर्ष की मुनादी करता रहा। परन्तु किसी ने इस तरफ ध्यान न दिया। बस मै और मेरा हर्ष बिलकुल अकेले रहे। न किसी ने उसकी तलाश की और न उसे कोई देखने के लिए आया।

इस कारण मेरा हर्ष निढाल होगया। क्योकि न तो मेरे सिवा अन्य किसी दिल ने उसकी दिलजोई की, न किसी अन्य के ओठो ने उसके ओठो को चूमा।

परिणाम यह हुआ कि अकेले रहने के कारण एक दिन मेरा हर्ष भी चल बसा।

और अब मैं अपने मृत 'शोक' की याद मे अपने मृत 'हर्ष' को याद करता हूँ।

लेकिन अफसोस ! यह स्मृति एक पतझड के पत्ते की तरह है जो हवा मे एक क्षण के लिए जरा गुनगुनाती है और फिर हमेशा के लिए खामोश होजाती है।

: ३५ :

परिपूर्ण संसार

ऐ, खोई हुई आत्माओ के देवता ! तू जो खुद देवताओ के बीच खोया हुआ है—मेरी आवाज सुनो !

हम पागल और आवारा रूहो की निगरानी करने वाली शिष्ट नियति ! मेरी सुनो,

मैं एक परिपूर्ण जाति में रहता हूँ। मैं, जो एक अपूर्ण हूँ।

मैं, मनुष्यता की अस्तव्यस्तता और बिखरे हुए तत्वों का धुँधला संग्रह। मैं पूर्णता-प्राप्त संसार में विचरता हूँ। और उन लोगों में घूमता हूँ जिनके कानून मुकम्मिल हैं और व्यवस्थाएँ सुथरी हैं, जिनके विचार चुने हुए हैं, जिनके स्वप्न व्यवस्थित हैं, और जिनकी कल्पनाए भली प्रकार लिखी हुई हैं।

ऐ ईश्वर ! जिनकी नेकियां नपी हुई और गुनाह तुले हुए हैं, इसके सिवा वह अनगिनत चीज़ें जो पाप-पुण्य से धुन्द में घटित होती हैं, वे तक लिखी जाती हैं और उनकी विषय-सूची तैयार होती है। यहा दिन और रात चाल-चलन के मौसमो में बाटी जाती है। और नपे-तुले नियमो से शासन होता है।

खाना, पीना, सोना अपना तन ढकना और, समय पर थकावट महसूस करना।

काम करना, खेलना, गाना, नाचना और जब घड़ी-घण्टा बजावे, तब विश्राम करना।

एक विशेष प्रकार से विचार करना, एक खास हद तक

महसूस (अनुभव) [illegible]
उदय होने पर सोचने और [illegible]
एक मुसकराहट के साथ [illegible]
कर, खैरात देना. चतुराई से [illegible]
प्रशंसा करना और चालाकी से [illegible]
शब्द में किसी को धन्यवाद कर देना [illegible]
जिला देना और जब दिन भर का [illegible]
लेना, एक निश्चित नियम के अनुसार [illegible]
कल्पना से अपनी आत्मा का मनोरञ्जन करना। [illegible]
की पूजा करना और बडी होशियारी से [illegible]
करना, आखिर इन सब बातो को इस तरह [illegible]
नष्ट हो गई हो।

किसी विशेष उद्देश से कल्पना करना। [illegible] के साथ विचार करना। मधुरता के साथ प्रसन्न रहना। [illegible] से सहन करना और आखिर इस नियत से प्याला खाली कर रखना कि कल उसे फिर भरा जावे।

हे ईश्वर! यह सब बाते पहले ही से सोची जाती है। पक्के इरादे से पैदा की जाती है। बडी सावधानी से इनका पोषण होता है। नियमो से इनका शासन होता है। तर्क इन्हे रास्ता दिखलाता है। और एक निश्चित विधि से इनका वध होता है और दफनाया जाता है। और इन खामोश कब्रो पर भी, जिनकी जगह मनुष्य की आत्माये है. निशान और अंक लगा दिये जाते है।

यह परिपूर्णता को पहुँचा हुआ संसार है। उत्तमोत्तम

जगत है। महान आश्चर्य की दुनिया है। ईश्वर के बाग़ का पका फल है और विश्व की सर्वोत्कृष्ट कल्पना है।

किन्तु हे ईश्वर, मैं यहा क्यों हूँ। मैं असफल इच्छाओं का कच्चा बीज, एक सिर-फिरा तूफान, न पूर्व की तालाश है न पश्चिम की। एक जलते हुए तारे का अश-मात्र !

ऐ खोई हुई आत्माओं के ईश्वर ! तू जो देवताओं के हजूम में खोया हुआ है, बोल, "मैं यहा क्यों हूँ !"